Nagarjuna Degree College
38/36, Ramagondanahalli,
Yelahanka Hobli,
Bengaluru - 560 064.

36303

Reg. No. | | | | | | | | |

III Semester B.C.A. Degree Examination, March/April - 2022

HINDI

Drama, Vigyapan Lekhan Aur Sankshepan

(CBCS Scheme Freshers and Repeaters 2019-20 Onwards)

Paper - III

Time : 3 Hours

Maximum Marks : 70

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या वाक्य में लिखिए:– (10×1=10)

1) 'टार्च बियरर' समाचार पत्र के पत्रकार का क्या नाम है?
2) छाया के पापा ने क्या कहकर उसे पाँच हज़ार रूपये दिये?
3) डॉ. वशिष्ट के शोध लेख किन पत्रिकाओं में बराबर छपते रहते हैं?
4) आदित्य किस यूनीवर्सिटी में काम करता है?
5) अंग्रेज़ सरकार के समय कौन–सी उपाधि दी जाती थी?
6) अभयमल की उम्र कितनी है?
7) रवीश 'वाइलेन्ट पेशेन्ट्स' को कहाँ रखने की सलाह देता है?
8) दीपक कौन हैं?
9) डॉ. वशिष्ट के जीवन का क्या उद्देश्य है?
10) 'मन के भँवर' के नाटककार कौन है?

II. निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं दो का संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए:– (2×7=14)

1) तुम्हारी ब्रेफिक्री देखकर जलन होती है। काश मैं भी ऐसी ही होती।
2) जो दुनिया में कुछ करना चाहते हैं उन्हें आराम कहाँ।
3) देखो छाया सुख और दु:ख तो केवल मन की स्थितियाँ है।

III. 'मन के भँवर' नाटक का कथानक सर्वकालिक है, जो समय के साथ पुराना नहीं पड़ता। स्पष्ट कीजिए। (1×16=16)

(अथवा)

'मन के भँवर' नाटक का सारांश लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

[P.T.O.

IV. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए। (2×5=10)

1) पूनम।

2) देवेन्द्र।

3) आदित्य।

V. किसी एक वस्तु पर विज्ञापन तैयार कीजिए। (1×10=10)

1) शैम्पू।

2) लैपटॉप।

VI. निम्नलिखित अनुच्छेद का उचित शीर्षक देते हुए एक तिहाई शब्दों में संक्षिप्तिकरण किजिए।(1×10=10)

उदारता का अभिप्राय नि:संकोच भाव से किसी को धन देना नही; वरना दूसरों के प्रति सेवा भाव रखना ही है। उदार पुरुष सदा दूसरों के विचार का आदर करते हैं और समाज में आपस में मिलजुलकर सेवा भाव से रहते है। यह नही समझना चाहिए कि उदारता केवल धन से हो सकती है। सच्ची उदारता इस बात में है कि मनुष्य को मनुष्य समझा जाए। गरीबों के प्रति दया का भाव हो, मानवीय व्यवहार हो। धन की उदारता के साथ सबसे बड़ी एक और उदारता की आवश्यकता यह है कि उस व्यक्ति के प्रति किसी प्रकार का एहसान न जताया जाये। एहसान जताना उपकृत को नीचा दिखाना है। ऐसा करके हम उसके स्वाभिमान को ठेस पहुँचाते है, उसकी आत्मा को दु:खी करते है इसलिए एहसान जताकर किया हुआ परोपकार, परोपकार नहीं अनुपकार है।